ओमशांति। शिव भगवानुवाच्य, बच्चों को समझाया गया है कि शिवबाबा को अपना शरीर नहीं है। और जो भी पार्टधारी हैं ब्र०वि०शं० सहित, इनको भी सूक्ष्म शरीर है। मनुष्यों को भी अपना शरीर है। शिवबाबा खुद कहते हैं– मैं अशरीरी हूँ। वास्तव में, जैसे तुम बच्चे अशरीरी थे, फिर शरीर लिया है पार्ट बजाने, वैसे मैं भी अशरीरी हूँ; परन्तु दुर्भाग्यशालियों को सौभाग्यशाली, कौड़ी तुल्य से हीरे जैसा बनाने मुझे आना पड़ता है व इस दरदरी भारत को, जो इस समय सम्पूर्ण भिखारी बन गए हैं, उनको फिर धनवान बनाते हैं। भारत सम्पूर्ण धनवान था। हीरे–जवाहरों के महल थे। अब 100% कंगाल हो गया है; क्योंकि प्युरिटी नहीं है। बाप ने समझाया है– यह भारत पवित्र था, वाइसलेस डीटी सॉवरंटी थी, और कोई धर्म न था। उनको पारसपुरी कहा जाता था, पारसनाथ रहते थे। अब तो यह पत्थर बन पड़े हैं, बहुत दुःखी हैं। सन्यासी कहते हैं, अल्प काल का काग विष्टा समान सुख है, बाकी सब दुःख ही दुःख है। बाप कहते हैं, इस भारत को फिर से कल्प पहले तुम शक्ति दल द्वारा (कौन सा शक्ति दल?) यह है गुप्त, कोई को पता नहीं सिवाय तुम ब्राह्मणों के। तुम जानते हो, हम श्रीमत पर चलते हैं। श्रीमत एक ही बार मिलती है। श्रीमत भगवानुवाच्य एक ही शास्त्र में है। भगवान कौन है, उनको नहीं जानते; इसलिए नास्तिक, ऑरफन्स बन गए हैं। अब फिर तुम आस्तिक बन अपना राज्य लेते हो, सदा सौभाग्यशाली बनते हो। फिर सदा दुर्भाग्यशाली बनेंगे। अभी सदा दुर्भाग्यशाली, सम्पूर्ण तमोप्रधान हो गए हो। ऐसे नहीं, दुर्भाग्यशाली द्वापर में थे। दुर्भाग्यशालता शुरू होती है। दुर्भाग्यशालता भी पहले सतोप्रधान थी, फिर रजो, तमो होती। अब तमोप्रधान हुए हैं। सिवाय तुम बच्चों के कोई भी बात को नहीं जानते। स्वदर्शनचक्रधारी तुम ब्राह्मण हो। देवताएँ स्वदर्शनचक्रधारी नहीं होते। तुम भारत की सेवा करने वाले हो। तुमको निश्चय है, हम श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बनाय ही छोड़ेंगे। इस निश्चय होने कारण, जितनी तुम बच्चों को खुशी है, इतनी देवताओं को भी नहीं हो सकती। तुम्हारा मर्तबा देवताओं से भी ऊँच है। तुम रूहानी बाप की मत पर रूहानी सर्विस करते हो, सब भारतवासियों को सदा शांत–सुखी बनाते हो। तुम मेहनत करते हो, श्रीमत पर सबको पवित्र बनाती हो, स्वदर्शनचक्रधारी बनाती हो। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं है। स्वदर्शनचक्रधारी कोई को कहो तो इनका बुद्धियोग विष्णु तरफ चला जावेगा, देवी–देवताओं तरफ नहीं जावेगा। स्वदर्शनचक्रधारी चित्र है ही विष्णु का; परन्तु तुम जानते हो वास्तव में विष्णु स्वदर्शनचक्रधारी नहीं है। स्वदर्शनचक्रधारी तुम ब्राह्मण हो। शंख भी तुम्हारे हाथ में है बजाने का। बाप कहते हैं– बच्चे देखो, अब हम तुमको पढ़ाय रहे हैं। इसको कहा जाता है बेहद के बाप द्वारा बेहद की पढ़ाई। स्वदर्शनचक्रधारी बनना है, फिर तुम जावेंगे देवी–देवताओं की राजधानी में। यह तुम्हारी है सबसे उत्तम, अमूल्य जीवन। ल०ना० की अमूल्य जीवन नहीं कहेंगे। वह तो प्रालब्ध भोगते हैं। अब टाइम देखो, कितना थोड़ा है! कहाँ तक यह पुराना शरीर जीता रहेगा। गाया हुआ है– ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा के लिए तो नहीं कहेंगे। इस ब्रह्मा की आयु बाकी इतनी है। इस रथ में बाप आकर रथी बनते हैं। यह है भाग्यशाली रथ। यह समझते हैं, यह रथ किसको किराये पर दिया है। जैसे वह घोस्ट लोग भी प्रवेश करते हैं, जैसे कि किराये पर लिया है। कोई तो अच्छे होते हैं, कोई बहुत चंचलता करते हैं। अब इस समय प०पि०प० ने इस शरीर में प्रवेश किया है, लोन लिया है; इसलिए इनका नाम नंदीगण है। इसको ज्ञान नहीं था। अब इसने तो बहुत गुरु किए, बहुत शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है; परन्तु अब बाप कहते हैं– तुमको सबने डुबाया है; इसलिए जो कुछ सुना अथवा पढ़ा हो, सो भूल जाओ। सिर्फ बाप से ही सुनो। और सब झूठ ही झूठ सुनाते हैं। अब बाप कहते हैं, मेरा ही सुनो और दिल में विचार करो। मुझ बाप को ही निरंतर याद

करो। 'योग' अक्षर नहीं बोलो। कहते हैं, हम योग में नहीं रह सकते हैं। तुम तो मूर्ख हो, बाप को याद नहीं कर सकते! बाप को भूल जावेंगे तो वर्सा ही गुम हो जावेगा। ऐसा मूर्ख कब देखा, जो मात–पिता कहकर, फिर कहे मात–पिता हमको भूल जाते हैं। तुम जानते हो, हम शिवबाबा को मात–पिता कहते हैं ना! बिगर भगवान सृष्टि कैसे रचेंगे; परन्तु यह है गुप्त। बाप आकर तुम बच्चों को मुख से एडॉप्ट करते हैं। तो ऐसे थोड़े ही है, जो माँ–बाप की गोद ले और कहेंगे– मैं भूल जाता हूँ। ऐसे तो हो (न) सके। बच्चे जानते हैं, तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। ऐसे बाप पर जब निश्चय हो तो फौरन भागकर आए, चटके। गीत में भी सुना न– दर पर आए हैं सिर हथेली पर। भल सर कट जाए, तो कब भी हम हाथ न छोड़ेंगे। बाबा भी फिर युक्ति से जाँच करते हैं। सन्यासी लोग के बहुत मनुष्य जाकर पैर धोते हैं। उनसे मिलता क्या है? अल्प काल थोड़ी शांति की प्राप्ति होती है। जैसे वह कहते हैं, सुख काग विष्टा समान है, वैसे गुरुओं द्वारा भी काग विष्टा समान शांति मिलती है। अब तुम आए हो सिर हथेली पर ले– बाबा, यह सब कुछ आपका है। इस कखपन के बदले आप हमको स्वर्ग में सदा सुख–शांति देते हो। हमको इस धन आदि से कोई शांति नहीं है। यह हमारा एक्सचेंज कर दो। बच्चे बाप के पास आए हैं एक्सचेंज करने। यह तन–मन–धन ईश्वर का ही दिया हुआ है। कहते भी हैं, अब आप पर बलिहार जाऊँगी। बाप कहते हैं, मैं फलाना हूँ, आर्यसमाजी हूँ, यह सब छोड़ो। यह देह के धर्म हैं। आत्मा कोई हिन्दू–मुसलमान नहीं है। इन सबको भूल, नंगे बन जाओ। मैं भी नंगा हूँ। घड़ी–2 आता–जाता हूँ। लोन लिया है तो सारा दिन ही इसमें थोड़े ही बैठ जाऊँगा। जैसे देखो, बाबा बॉम्बे में गया तो लेण्ड लेडी को कहा– तुम भी बैठे रहो। हम रहते हैं। तो बाप कहते हैं, तुम आए हो एक्सचेंज करने। बाबा, हम आपके हैं। फिर कोई वस्तु में, संबंध में 'ये मेरा है', 'ये मेरा है', कोई में ममत्व न लगाना चाहिए। बाप कहते हैं, हम फिर तुमको 21 जन्म लिए वर्सा देंगे। तुम जानते हो, मम्मा–बाबा ने पूरा इश्योरेंस किया है। सब कुछ बाबा का ही है। गीत बड़ा अच्छा है। तो सुनकर फिर प्रैक्टिकल में आते हो। तुम तो कुछ देते हो, हम वापिस दे देते हैं। बच्चे, तुम ट्रस्टी होकर रहो। मैं तुम्हारा धन आदि लेकर क्या करूँगा! ऐसे नहीं, शिवबाबा अपने घर कुछ ले जावेंगे। एक पाई भी नहीं। तुम सरेण्डर हो ट्रस्टी बन जाओ। हर बात की बाप से राय लेनी है। धन को अकर्तव्य कार्य में लगने से पाप तुम्हारे सिर पर पड़ेगा; इसलिए श्रीमत देते हैं। वही सबका मात–पिता है। कृष्ण की सोल में इस 84 जन्म के पहले यह ज्ञान न था। अब बाप आया हुआ है। कृष्ण की सोल फिर इस ज्ञान से सो श्री कृष्ण बनती है। तुम्हारा यह बहुत जन्मों के अंत का जन्म है। अब समय थोड़ा है। श्रीमत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बनेंगे। श्रीमत पर न चलेंगे तो कम बनेंगे। बाबा कोई अपने लिए थोड़े ही महल बनाते हैं। कहते हैं, स्वर्ग के महल भी तुम्हारे लिए हैं। शिवबाबा कहते हैं, मैं ब्रह्मा द्वारा यह सब तुम बच्चों के लिए बनवाए रहा हूँ। यह सब कुछ तुम बच्चों के लिए है। बच्चों को वर्सा देकर जाते हैं। यह बेहद का बाप भी कहते हैं, यह सब कुछ तुम्हारे लिए हैं। बच्चे तो बहुत बनेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही ब्राह्मण कुल पैदा हुआ था, फिर दैवी कुल, क्षत्रिय कुल, वैश्य कुल। कितना क्लीयर समझाते हैं। वर्णों में आते हो न! आत्मा को नॉलेज मिलती है प०पि०प० से। बाप की ही महिमा है– मनुष्य सृष्टि का बीज है। वह जड़ भी होता है। उनको भी झाड़ का नॉलेज है; परन्तु वर्णन नहीं कर सकते। मनुष्य जानते हैं ऐसे झाड़ वृद्धि को पाता है। यह फिर है ह्यूमन ट्री, जिसका बीज मैं ऊपर में रहता हूँ; इसलिए सभी मुझे याद करते हैं। मैं सबका बाप हूँ। ऐसे भी बहुत झाड़ होते हैं, मात–पिता न हो तो फल नहीं दे। यह बाप तो है स्वर्ग का रचता, तो ज़रूर उनसे वर्सा मिलना चाहिए। बरोबर अब वर्सा मिल रहा है और कल्प–2 मिलता रहेगा। यह अनादि ड्रामा है। इस राज़ को तुम एक्टर ही जानते हो।

बाकी तो सब हैं तुच्छ बुद्धि। तुम जानते हो शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा अथवा सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान देते हैं। हमारी आत्मा इस सृष्टि के आदि–मध्य–अंत को जानती है। हमारा धर्म ही है हर एक को सुखधाम का मालिक बनाना। हर एक को सुख देना है। किसको भी कब दुख न देना है। बाप कभी किसको दुख नहीं देता। यह तो झूठे कलंक लगाते हैं कि दुख–सुख परमात्मा ही देते हैं। मैं तुम सब बच्चों को सुखी बनाता हूँ। वहाँ सब आत्माएँ स्थायी शांत में रहेंगी। सन्यासी आदि से तो करके अल्प काल के लिए शांति मिलती है। तुम हो शिव आचार्य की फैमली। शंकराचार्य की कोई फैमली नहीं है। जानते हो बाप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। अब औरों को भी रास्ता बताना है। तुम ईश्वरीय पण्डे हो। पाण्डव शक्ति सेना गाई हुई है। सबको बेहद बाप से वर्सा दिलाने पुरुषार्थ करना है। सदा सुखी, सदा शांत बनना है। वह सोशल वर्कर्स तो कुछ अल्प काल क्षणभंगुर सुख देते हैं। तुम हो रूहानी वर्कर्स श्रीमत पर चलने वाले। हर एक को सुख–शांति देने का रास्ता बताना है। इसका मतलब यह नहीं, गृहस्थ व्यवहार को छोड़ना है। वह छोड़ना तो सन्यासियों का काम है। तुमको दोनों तरफ तोड़ निभाना है, नहीं तो फिर उनको रास्ता कौन बतावेगा! घर में रहते कमल फूल समान पवित्र रहना है। आप समान हंस बनाना है। हंस और बगुले इकट्ठे रह नहीं सकेंगे। हंस न बने तो कहना चाहिए, तुम अलग रहो। वह हो गया पतित, यह पावन। तो पतित और पावन इकट्ठे थोड़े ही रह सकते हैं। अभी तुम संगमयुग पर बाप के हवाले हुए हो, तुम ब्राह्मण बने हो; इसलिए इस समय तुम न देवता, न शूद्र हो, तुम हो ब्राह्मण चोटी। ऊँच ते ऊँच शिवबाबा है। वह बाप आकर ब्रह्मा मुख द्वारा बच्चों को एडॉप्ट करते हैं। कदम–2 श्रीमत पर चलने से बेड़ा पार हो जाएगा। माया की मत पर चलेंगे तो घाटा पड़ता रहेगा। श्रीमत को छोड़ अपनी मत पर चले तो खाता उल्टा हो जावेंगे। 12 मास का कागज रखते हैं न व्यापारी लोग! बाप भी व्यापारी, सौदागर, जादूगर है। सौदा ऐसे देते हैं– हम पाई–पैसा देते हैं, बाबा रिटर्न में स्वर्ग का मालिक बनाय देते हैं। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का जादू हुआ न! इसलिए जादू कहते हैं। कोई सूरमा नहीं है। ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया.... नॉलेजफुल बाप के बच्चे नॉलेजफुल बनते हैं। अभी तुमको रचता–रचना का नॉलेज है। तुम जानते हो ड्रामा में सबसे ऊँचा पार्ट किसका है। साधु–संत–महात्मा आदि तो कुछ भी नहीं जानते। तुम सबको जानते हो। कितना नशा रहना चाहिए! हम हैं एडॉप्टेड चिल्ड्रेन गॉड फादर के। वह है स्वर्ग का रचता। हम स्वर्ग का मालिक बनने पुरुषार्थ करते हैं। तुम प्रतिज्ञा करते हो, हम भारत को स्वर्ग अवश्य बनावेंगी। अण्डर ग्राउंड गुप्त को कहते हैं। चोर लोग कोई ऐसे होते हैं, दिन को अच्छे कपड़े पहन घूमते रहेंगे, रात को डाका मारते हैं। तुम बिल्कुल ही गुप्त हो। ब्राह्मण ही ब्राह्मणों को जानते हैं। हम भारत की बहुत सेवा करते हैं श्रीमत पर। श्रीमत गाई हुई है। सन्यासियों ने वेदों आदि को बहुत मान दिया है। समझते हैं, भगवान के मुख से निकले हैं; परन्तु भगवानुवाच्य एक ही गीता में है। बस, पीछे–2 और–2 धर्म आए हैं। उन्होंने अपने शास्त्र बनाए हैं। ड्रामा में इन सब शास्त्रों की नूँध है। ऐसे नहीं, यह नॉलेज परम्परा चलेगी। बाप बच्चों को अति मीठा बनाते हैं। कितना मीठा, कितना प्यारा शिव भोला भगवान है। झोली भर देते हैं। नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इन्कम। सन्यासियों पास इनकम कुछ नहीं। अच्छा, बापदादा, मीठी मम्मा का सिकीलधे बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ